## गर्मी की छुट्टियां...

तारों सजी रातें ..... तमतमाती दुपहरियों की
याद आती हैं बहुत ..वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की

अधखिले, नाज़ुक, .. कच्चे थे हम
झूठ बोलते थे पर ... सच्चे थे हम
थोड़े से बुरे .... थोड़े अच्छे थे हम
वो दौर था ..... जब बच्चे थे हम

चढ़ते पारे के साथ मौसम गरमाने लगता था
आहट ग्रीष्म की ..... बसंत जाने लगता था
दिन चढ़ते चढ़ते आँगन तमतमाने लगता था
करीब है दिन छुट्टियों के .... बताने लगता था

खुल जाते थे दिल-ओ-दिमाग, स्कूल बंद होते थे
सच ! वो दिन ..... हमें बहुत पसंद होते थे
चलो करते है ज़िक्र उन तमाम .. मस्तियों की
याद आती हैं बहुत ..वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की

शिकंजी, निम्बू-पानी .. पना के दिन
रंगीन .... रस भरे .... रसना के दिन
पांच दस पैसे की .... 'बर्फ़ की कैंडी' थी
'ऑरेंज-बार' भी न ज्यादा .. महंगी थी

गली से जब ..... आइसक्रीम वाला गुजरता था
थोड़ा मुस्कुराकर दादी का बटुआ निकलता था
रेतकर मिलते थे .... वो गोले बरफ के
रंगीन चाशनी में .. नज़ारे हर तरफ़ के

मिठास न पूछिए उन चुस्कियों की
मटकी में बिकती उन कुल्फियों की
बगैर मिक्सी, .. मथनी वाली .. लस्सियों की
याद आती हैं बहुत . वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की

कितनी लुभावनी थी वो दुनिया कॉमिक्स की
बेताल डायना .... लोथार मैनड्रैक की
हर किरदार ..... सच्चा और अपना लगता था
मिलना 'चाचा चौधरी साबू' से अच्छा लगता था

ऐतिहासिक पौराणिक गाथाओं मिलना शुरू हुए हम
'अमर चित्र कथाओं' से जब रुबरु हुए हम
लोटपोट, मधु-मुस्कान के पन्ने
चंपक, नंदन, चंदा-मामा सब अपने

'बिल्लू', 'ड्ब्बू जी' .. 'श्रीमतीजी' के किरदार
आप बतायें कौन नहीं करता था इनसे प्यार
जासूसी नावेल भी कुछ कमाल के थे
फैन हम तब .. राजन इकबाल के थे

किस्से क्या सुनाएँ ..... अब उन कहानियों की
याद आती हैं बहुत .. वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की
पाठ, .. सबक और न कोई उसूल होते थे
लंबी छुट्टियों के लिए बंद .. स्कूल होते थे

पलट के देखा .. हुए मुखातिब .. हम गुज़रे पलों से
इन दिनों ही मिलते थे हम मामा-मौसी के बच्चों से
निजात मिल चुकी होती थी इम्तिहान के पर्चों से
न कमाई की चिंता .. न सरोकार खर्चों से

उत्पात, शैतानियाँ वो छोटी-बड़ी हमारी
न पूछिए ..... वो धमा-चौकड़ी हमारी
नाक में दम कर देते थे नाना नानियों की
इन्तिहाँ हो जाती थी ..... नादानियों की

फिर पिटाई, डांट डपट ..... पापा-मम्मियों की
याद आती हैं बहुत .. वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की
वाकिफ उस दौरान 'लूडो', 'सांप-सीढ़ी' से हुए
सीखकर बड़े इसी तरह पिछली पीढ़ी से हुए

कैरम, शतरंज, वो खेल .. ताश के
कोट-पीस, रमी, तीन-दो-पांच के
लुका-छिपी और वो खेल 'खो-खो' का
हाथ के पंखे, टेबुल फैन के झोंकों का

किताबें सेल्फ़ में ... न रोज़ रोज़ का स्कूल था
तालाब वो गाँव का .. हमारा स्विमिंग पूल था
तैरती तस्वीर आँखों में उन डुबकियों की
प्यास बुझाती मटकों, घड़ों, सुराहियों की

चढ़ कर पेड़ पर चखते ..... उन अमियों की
याद आती हैं बहुत .. वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की
शामें दूरदर्शन की .. वो रेडियो के दिन
बात न होगी मुकम्मल ... ये कहे बिन

'हवामहल', 'जयमाला', वो 'भूले बिसरे गीत'
जिनसे जुड़ा है .. हमारा कल, हमारा अतीत
छत पे बैठकर .. 'छाया-गीत' के नगमें
गुज़रे वक़्त में सुने होंगे ... आप सबने ?

आवाज़ 'अमीन सयानी' की बाँध देती थी समां
याद कीजिये 'एस कुमार का 'फ़ल्मी मुकदमा'
'मोदी के मतवाले राही', 'इंस्पेक्टर ईगल'
क्या क्या करें बातें .. क्या क्या करें गल

रात वो ..... पौने नौ का समाचार हफ्ते में फ़क़त एक दिन चित्रहार
शुरुआत थी धारावहिको के प्रयोग की बात क्यों न छिड़े फिर 'हमलोग' की
वही 'बुनियाद' थी ..... नई सोच की

बातें बहुत हो गई आज .. पुराने टीवी रेडियो की
याद आती हैं बहुत .. वो छुट्टियाँ ... गर्मियों की
उन दिनों साहित्य से परिचय हो रहा था
बुनियाद मुस्तकबिल का तय हो रहा था
'धर्मयुग' 'माधुरी', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'
'सरिता', 'मुक्ता', 'मनोरमा', 'दिनमान'

इलस्ट्रेटेड वीकली, ब्लिट्ज पॉपुलर हुआ करते थे
पड़ोसी एक दूजे से ..... मांग कर पढ़ा करते थे
एक पकड़ थी इन पत्र-पत्रिकाओं, रिसालों में
सच ! ..... बड़ी बरक़त थी उन सालों में

घर पे सजती पिताजी की ... वो साहित्यिक बैठकें
उन अदबी नशिस्त, गोष्ठियों के बारे में क्या कहें
आध्यात्मिक, राजनैतिक चर्चे हुआ करते थे
समझते .. तो कम थे ..... पर सुना करते थे

घर की लाइब्रेरी में मैथली, महादेवी, ... प्रेमचंद थे
दिनकर, निराला, सुमित्रा, सुभद्रा सब हमें पसंद थे
इन्हीं दौरान मुलाकात .. 'मीर-ओ-मजाज़' से हुई
ग़ालिब, दुष्यंत, फ़िराक, 'फैज़-ओ-फ़राज़' से हुई

टूटी-फूटी शायरी ... उन बेतुकी तुकबंदियों की
याद आती हैं बहुत .. वो छुट्टियाँ .. गर्मियों की...

- साइबर नजर

# यह सप्ताह / राजा और महात्मा

चंदनपुर का राजा बड़ा दानी और प्रतापी था, उसके राज्य में सब खुशहाल थे पर राजा एकबात को लेकर बहुत चिंतित रहा करता था कि धर्म व दर्शन पर लोगों के विचारोँ मेँ सहमति क्यों नहीं बनती। एक बार राजा ने विभिन्न धर्मों के उपदेशकों को आमंत्रित किया और एक विशाल कक्ष में सभी का एक साथ रहने का प्रबंध करते हुए कहा , " अब अगले कुछ दिनों तक आप सब एक साथ रहेंगे और आपस में विभिन्न धर्मो और दर्शनों पर विचार-विमर्श करेंगे। और जब आप सभी के विचार एक मत हो जायेंगे तो मैं आपको ढेरों उपहार देकर यहाँ से विदा करूँगा।" और ऐसा कहते हुए राजा वहाँ से चला गया।

कक्ष में घोर विचार-विमर्श हुआ , सभी अपनी -अपनी बात समझाने में लगे रहे पर कुछ दिन बीत जाने पर भी वे एक मत नहीं हो पाये। पड़ोसी राज्य में रहने वाले एक महत्मा जी को जब ये बात पता चली तो वह राजा से मिलने पहुंचे। " हे राजन ! मैंने सुना है कि तू बड़ा दानी है , क्या तू मुझे भी दान देगा ?" , महात्मा जी बोले। "अवश्य ! बताइये आपको क्या चाहिए।", राजा बोला। महत्मा जी – " मुझे तेरे अनाज के गोदाम से कुछ अनाज चाहिए। राजा जी, बिलकुल आप मेरे साथ

कोलंबा कालीधर

आइये।" और राजा उन्हें गोदाम तक ले गया।

वहाँ पहुचते ही महात्मा जी बोले,"अरे! ये क्या राजन , तुम्हारे गोदाम में तो तरह तरह के अनाज रखे हैं तुम इन सबकी जगह कोई एक अनाज ही क्यों नहीं रखते ?" राजा को यह सुन थोड़ा अचरज हुआ और वह बोला, " यह कैसे सम्भव है, अगर मैं गेंहूं, चावल , दाल , इत्यादि की जगह बस एक अनाज ही रखूँगा तो हम अलग अलग स्वाद और पोषण के भोजन कैसे कर पाएंगे, और जब प्रकृति ने हमे इतने ढेर सारे अन्न दिए हैं तो बस किसी एक अन्न का ही प्रयोग करना कहाँ की बुद्धिमानी है ?

" बिलकुल सही राजन , जब तुम विभिन्न अनाजों की उपयोगिता एक से नहीं बदल सकते तो भला विभिन्न धर्मों के विचारों और दर्शनो को एक कैसे कर सकते हो ? सबकी अलग-अलग उपयोगिता है और वे समय-समय पर मनुष्य का मार्गदर्शन करते हैं।" महात्मा जी ने अपनी बात पूरी की। राजा को अपनी गलती का अहसास हो चुका था उसने कक्ष में बंद सभी उपदेशकों से क्षमा मांगते हुए उन्हें विदा कर दिया।

**दोस्तों, यदि पूरी मानवजाति बिल्कुल एक जैसा ही सोचती तो हम कभी इतनी प्रगति नहीं कर पाते। हमारे विचार ही हमे विशिष्ट बनाते हैं, प्रबंधन के क्षेत्र में भी लीडर्स ऐसी टीम बनाना चाहते हैं जिसमे अलग-अलग अनुभव और विचार के लोग हों। अत: अगर कभी आपका विचार औरों से मेल ना खाये तो इससे घबराने की ज़रूरत नहीं, बल्कि यह देखने की ज़रुरत है कि पूरी पिक्चर में आपका विचार कहाँ फिट हो सकता है , और दूसरी तरफ यदि किसी और का विचार आपसे मेल ना खाये तो उसपर नाराज होने की बजाये ये समझने का प्रयास करना चाहिए कि उस विचार का कहाँ और कैसे प्रयोग किया जा सकता है।**

# एक पुरानी कहानी / नया विज्ञान

**असग़र वजाहत**

– देखो हमने इतिहास- भूगोल बदल डाला । अब हम विज्ञान बदलने जा रहे हैं। अब हम सिद्ध करने जा रहे हैं कि हमारे देश में आज से 50000 साल पहले सुपरसोनिक जेट से अधिक तेज चलने वाले वायुयान थे। हमारे देश में प्लास्टिक सर्जरी लाखों साल पहले हुआ करती थी ।

न्यूटन कहता है कि पृथ्वी में शक्ति है । यह गलत है।हम कहते हैं कि आकाश में शक्ति है। न्यूटन कहता हैं किसी चीज को ऊपर फेंको तो वह नीचे गिर जाएगी। हम कहते हैं कि किसी चीज को ऊपर फ़ेकों तो आकाश में चली जाएगी। देवलोक में चली जाएगी। देवलोक में बड़ी शक्ति है।

हम आज यही सिद्ध करेंगे। उसके चेले एक भारी पत्थर ले आए। उसने पत्थर को दोनों हाथों से उठाकर आसमान की तरफ फेंका। पत्थर ऊपर जाने लगा। तालियों की गड़गड़ाहट और बढ़ गई। जय जय कार के नारे लगने लगे। बहुत शानदार मंच लग गया। फूल और बैनर पोस्टर लग गए। लाखों की भीड़ आ गई। स्टेज पर 'नैटंकी' शुरू हो गई।

**अचानक देखा गया की आसमान में उछाला गया पत्थर बहुत तेजी से नीचे आ रहा है। जैसे जैसे वह नीचे आ रहा है वैसे वैसे उसका आकार बढ़ता जाता है। लोगों ने इधर-उधर भागने की कोशिश की। मंच से नेता कूदे। भागो ,बचाओ-बचाओ की बहुत सी आवाज़ें आने लगीं है लेकिन ऊपर से गिरने वाला पत्थर इतना बड़ा और इतना भारी हो गया था कि पूरा मंच और जय जयकार करने वाले सभी लोग उसके नीचे आ गए हैं।**

# विदेशियों द्वारा की गई मानवोपयोगी खोज और भारत के अति प्रतिभाशाली की खोज

**विदेशियों की खोज**

1. मोबाईल फोन
2. **Facebook** ( फेसबुक )
3. **WhatsApp** ( ह्वाटसएप )
4. **Email** ( ई मेल )
5. **Fan** ( पंखा )
6. जहाज
7. रेलगाड़ी
8. रेडियो
9. टेलीविजन
10. कम्प्यूटर
11. चिप ( **Memory Card** )
12. कागज
13. प्रिंटर
14. वाशिंग मशीन
15. **AC** ( एयर कंडीशनर )
16. फ्रिज
17. इंटरनेट
18. चंद्रमा की दूरी
19. सूर्य का तापमान
20. पृथ्वी की आकृति
21. दूरबीन
22. सैटेलाइट
23. चुम्बक
24. घर्षण, गुरुत्वाकर्षण, न्यूटन के नियम
25. रोबोट
26. मैट्रो रेल
27. बुलेट ट्रेन
28. परमाणु बम, हाइड्रोजन बम
29. बंदूक
30. मिसाईल
31. दवाईयाँ
32. कृत्रिम हार्ट
33. स्टेंट ( खून की नलियों में लगने वाला )
34. साईकिल
35. कार
36. लिफ्ट

इत्यादि इत्यादि

**प्रतिभाशाली भारतीयों की खोज**

1. भूत-प्रेत
2. राक्षस/चुड़ैल
3. आत्मा- परमात्मा
4. स्वर्ग- नरक
5. पृथ्वी शेषनाग के फन पर टिकी है
6. गंगा शिवजी के जटा से निकलती है
7. कलियुग में मनुष्य के सारे दुखों के अंत का उपाय - सत्यनारायण कथा
8. मृत्यू से छुटकारा पाने का उपाय- महामृत्युंजय मंत्र
9. भगवान के 10 अवतार
10. 33 करोड़ देवी-देवता
11. बंदर पढ़ा लिखा था , पत्थर पर राम लिखता था
12. सभी देवी-देवताओं के पास अलग-अलग प्रकार की शक्ति जैसे अनाज की देवी, धन की देवी, शिक्षा की देवी, मजदूर( कामगार ) की देवी, भूत-प्रेत से बचाने वाले देवी-देवता, ग्रहों की दिशा बदलने वाले/प्रकोप दूर करने वाले आदि ।
13. अनेक व्रत/उपवास
14. सर्वाधिक मंदिरों का निर्माण
15. सर्वाधिक आध्यात्मिक गुरु जो सैक्स कांड में जेल जाते हैं
16. मंत्र/उपवास से इलाज करने वाले डाक्टर
17. मन चाहा प्यार, नौकरी, व्यापार में घाटा, गृह क्लेश, वशीकरण आदि का समाधान
18. शिक्षा में विज्ञान एवं महापुरुषों के योगदान की जगह आध्यात्मिक ( गीता ) शिक्षा
19. बाल विवाह
20. सती प्रथा
21. जाति वर्ग
22. शिक्षा, व्यापार का एकाधिकार
23. वैज्ञानिकता को आध्यात्मिकता से जोड़ना
24. मानव जाति के मुख्य वर्ग 'स्त्री' को अधिकार देने पर हंगामा
25. परशुराम, राम, कृष्ण जैसे तीन तीन अवतार का एक साथ होना
26. गणपति के रूप में आदमी पर हाथी फिट कर देना
27. हनुमानजी सूर्य को निगल गए
28. ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ, बाकी सारे नीच
29. मिठाई देवता पर चढ़ाते हैं, डायबिटीज पुजारी को।

इत्यादि इत्यादि